

प्राकृतिक खेती: एक स्वास्थ्यप्रद और पर्यावरण का संरक्षणीय विकल्प

मोहित यादव

प्रस्तावना:

प्राकृतिक खेती एक ऐसी विकल्पिक खेती प्रणाली है जिसमें खेती की जानी-मानी प्रक्रियाओं में केमिकल खाद्य पदार्थों के उपयोग को न करते हुए। फसलों को उत्पन्न किया जाता है। यह खेती का प्राथमिक उद्देश्य है खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देना। स्वास्थ्यप्रद और पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए।

प्राकृतिक खेती के तत्व

जैविक खाद्य पदार्थ: प्राकृतिक खेती में खाद्य पदार्थ के रूप में जैविक खाद्य पदार्थों का उपयोग किया जाता है। जैसे कीटनाशक उर्वरक और उर्वरक समृद्ध मिट्टी। ये पदार्थ पौधों को पोषण प्रदान करते हैं और उन्हें स्वस्थ विकास के लिए मदद करते हैं।

प्राकृतिक बीज: प्राकृतिक खेती में प्राकृतिक बीजों का उपयोग किया जाता है जो जैविक और प्राकृतिक तरीके से प्रजनन किए जाते हैं। ये बीज बीमारियों और कीटों के प्रति प्रतिरोधी होते हैं।

प्राकृतिक प्रणाली: प्राकृतिक खेती में खेती की प्रक्रियाओं को संतुलित और प्राकृतिक प्रणाली में आधारित किया जाता है। इसमें बारिश के पानी को सुधारने।

मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने, और खेतों की सुरक्षा करने के लिए प्राकृतिक प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है।

प्राकृतिक खेती के लाभ:

स्वस्थ भोजन: प्राकृतिक खेती से उत्पन्न की गई फसलें केमिकल खाद्य पदार्थों से मुक्त होती हैं और इसमें अधिक मात्रा में पोषण होता है। यह भोजन स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी होता है क्योंकि यह हानिकारक केमिकल से मुक्त होता है।

संरक्षित पर्यावरण: प्राकृतिक खेती में केमिकल खाद्य पदार्थों का उपयोग नहीं होता है। जिससे भूमि, पानी और वायु प्रदूषण कम होता है। इससे पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाले उत्पादन की रोकथाम होती है।



उचित मूल्य: जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है जिससे किसानों को अधिक मूल्य मिलने लगा है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति

मोहित यादव,

पी.एच.डी (कृषि-विज्ञान) शोध छात्र

चंद्रशेखर आज़ाद कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर

मजबूत होती है और उन्हें अधिक उत्पादन करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

भूमि संरक्षण: प्राकृतिक खेती से मिट्टी की उपज को सुधारा जा सकता है और भूमि की उर्वरता को बनाए रखा जा सकता है। केमिकल का उपयोग कम होने से भूमि का पोषण समृद्ध होता है और इसकी फसलों की उत्पादकता बढ़ जाती है।

उचित दाम: जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से उनकी कीमतें भी बढ़ती हैं, जिससे किसानों को उचित मूल्य मिलता है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है और उन्हें और अधिक उत्पादन करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

समुचित जल संरक्षण: प्राकृतिक खेती में जल संयंत्रण प्रणाली का सही उपयोग किया जाता है, जिससे पानी की बर्बादी को कम किया जा सकता है। यह जल संरक्षण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

प्राकृतिक खेती की चुनौतियां:

उत्पादकता की चुनौती: प्राकृतिक खेती में केमिकल खाद्य पदार्थों का उपयोग कम होता है। जिससे फसलों की उत्पादकता में कमी हो सकती है। इसका समाधान करने के लिए किसानों को नई और उन्नत तकनीकों का उपयोग करना होगा जो फसलों की उत्पादकता को बढ़ा सके।

ज्ञान की कमी: प्राकृतिक खेती की तकनीकें अधिक उचित मानकों पर आधारित होती हैं और इसके लिए किसानों को नए तरीके सीखने की आवश्यकता होती है। इसमें शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है ताकि किसान इसे सफलतापूर्वक अपना सके।



बाजार की मांग की कमी: जैविक उत्पादों की मांग अभी भी उचित स्तर पर नहीं है। जिससे किसानों को उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है। इस समस्या का समाधान करने के लिए बाजार में जैविक उत्पादों की मांग बढ़ाने के लिए सचेत करने की आवश्यकता है।

समुचित विनियमन की चुनौती: प्राकृतिक खेती में समुचित विनियमन की जरूरत होती है ताकि किसान उचित समय पर उचित कार्रवाई कर सकें। इसमें विभिन्न विकल्पों का अध्ययन करना और सबसे उपयुक्त विनियमन तकनीक का चयन करना होता है।

उचित जल संचयन की चुनौती: प्राकृतिक खेती में जल संचयन का सही

उपयोग किया जाना चाहिए। जिससे पानी की बर्बादी को कम किया जा सके। इसके लिए किसानों को उचित संचयन प्रणाली का चयन करना होगा और जल संरक्षण के लिए संवेदनशील तरीके से प्रयोग करना होगा। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार संगठन और किसानों के बीच साझेदारी को मजबूत करना होगा। इससे प्राकृतिक खेती को सुदृढ़ बनाए रखने में मदद मिलेगी और किसानों को इस प्रकार की खेती करने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा।

संक्षिप्त समापन

प्राकृतिक खेती एक समृद्ध सुस्थिर और संरक्षित खेती पद्धति है जो स्वास्थ्यप्रद भोजन प्रदान करती है और पर्यावरण को सुरक्षित रखती है। इसके लाभों को समझकर हमें इसे बढ़ावा देना चाहिए ताकि हम स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य की ओर अग्रसर हो सकें।

